शन्नो और उसके 100 हाथी

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः अतनु रॉय

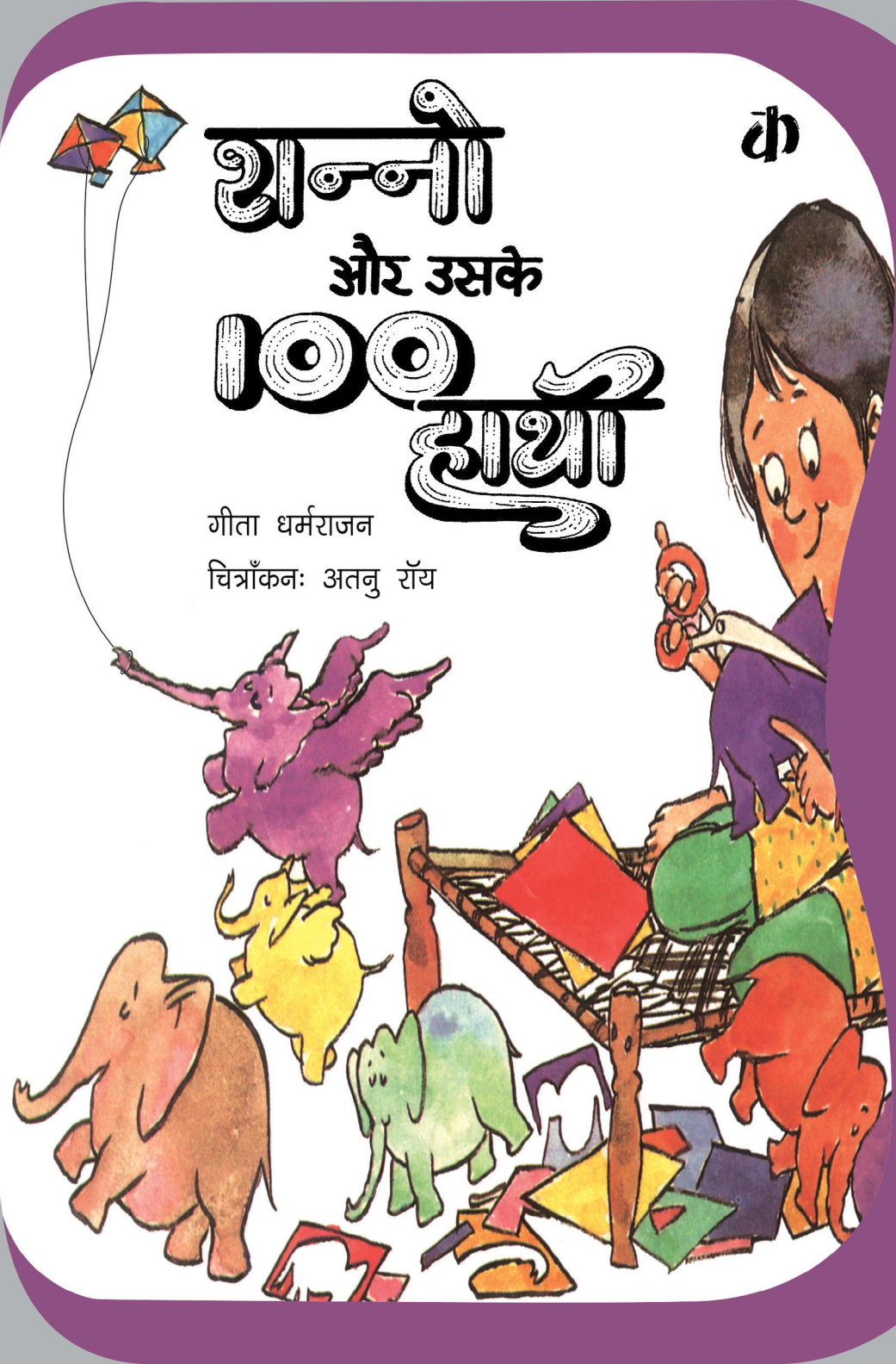

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvk dk fy,

cMk mnns'; Ük[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्‌वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

'kUuk vkj mldk lk gkFkh एक छोटी सी लड़की शन्नो सिखाती है कि थोड़ी सी सूझबूझ ओर मेहनत का फल हमेशा मीठा ही होता है।

(˝) वाले शब्दों का अभ्यास कराएँ। एकवचन का बहुवचन बनाना सिखाएँ।

शन्नो और उसके 100 हाथी

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः अतनु रॉय

कथा

"अरे! स्कूल की छत तो फिर से टपकने लगी" चिन्तित स्वर में शन्नो की टीचर ने कहा।

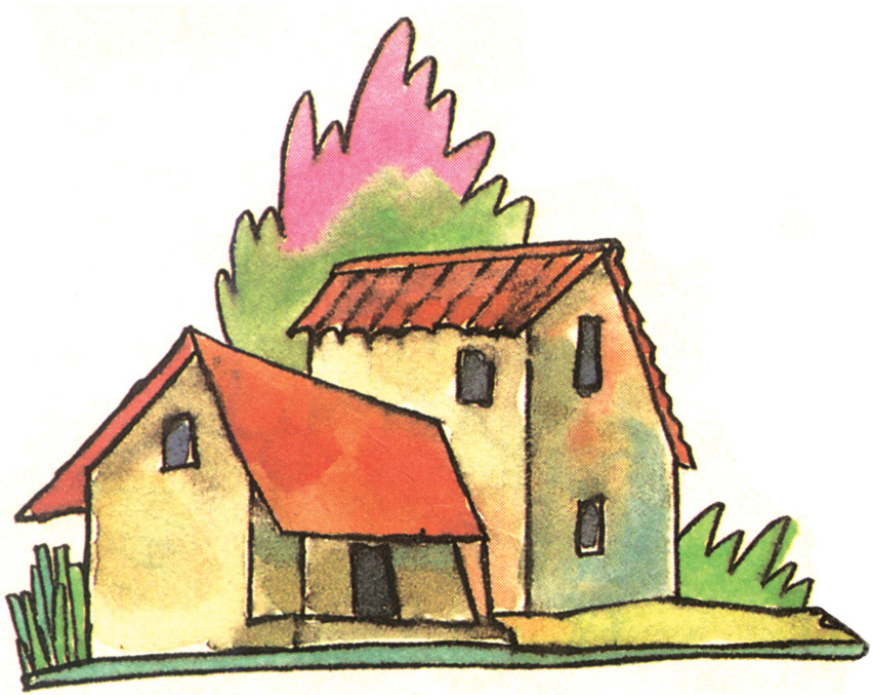

"छत की मरम्मत कराने के लिए हम सबको पैसे इकट्ठे करने होंगे। क्यों न इस बार हम एक मेला लगाएँ?

हममें से हर एक कुछ न
कुछ बनाकर लाएगा और
मेले में बेचेगा।

इस तरह मज़ा तो
आएगा ही, साथ ही कुछ
पैसे भी इकट्ठे हो जाएँगे,”
शन्नो बोली।

सबको शन्नो की यह
बात अच्छी लगी!

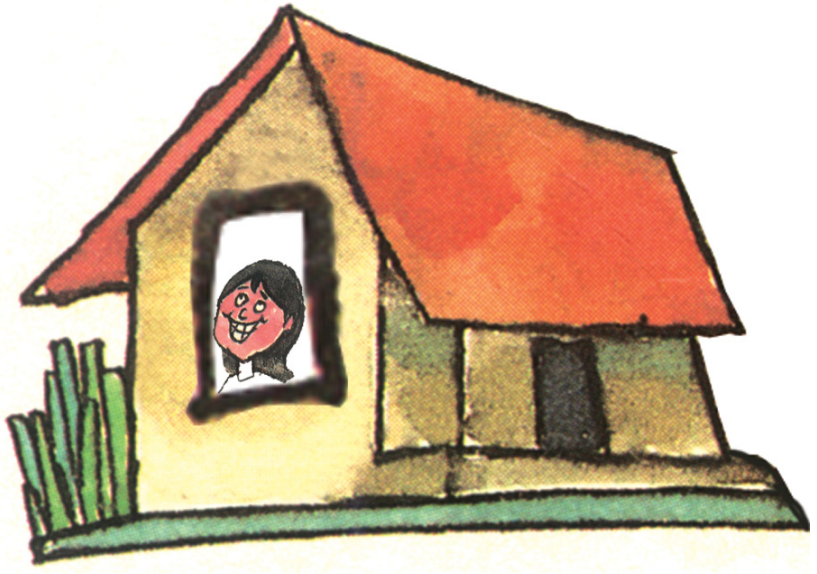

सीता की माँ ने कहा कि
वे मेले के लिए जलेबियाँ
बना देंगी।

अहमद के अब्बा जो
कुम्हार हैं, उन्होंने बहुत
सारे मिट्टी के खिलौने
बनाने का वायदा किया।

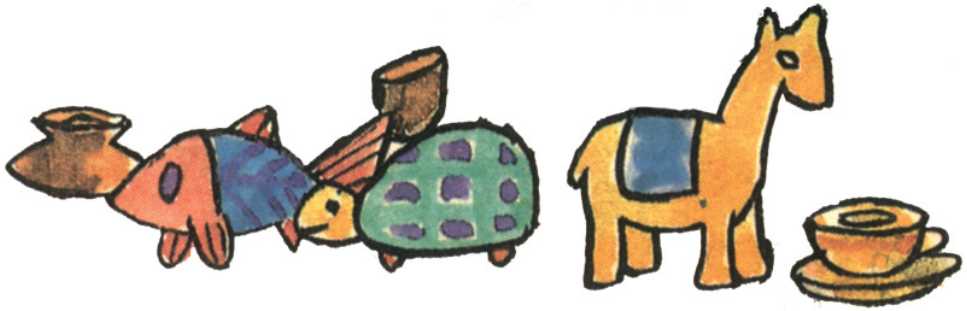

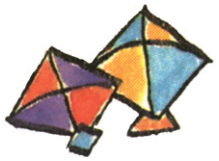

और शन्नो ?

"मेरे पास अभी बिल्कुल समय नहीं है," शन्नो की माँ ने कहा, "तुम खुद ही कुछ बना लो, बेटी।"

शन्नो चिन्ता में पड़ गई।

वह सोचने लगी कि, वह मेले के लिए क्या बनाकर ले जा सकती है। तभी उसे एक विचार आया!

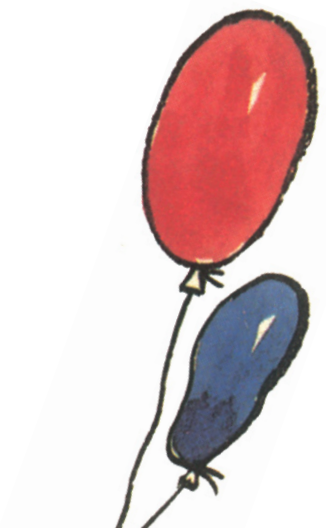

और ...

उस रात, नन्हे चाँद ने आकाश से झाँककर, शन्नो को अपनी चारपाई पर, कागज़ के टुकड़े काटते देखा।

अगले दिन रंगीन कागज़ के सौ हाथी शन्नो के बैग में थे।

कूदती-फाँदती शन्नो स्कूल की ओर चल दी।

पर मासूम शन्नो को मालूम ही न था कि रात नन्हे चाँद ने एक जादुई मंत्र पढ़ा था।

तभी तो शन्नो एक ही रात में सौ हाथी बना सकी थी!

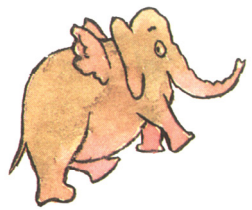

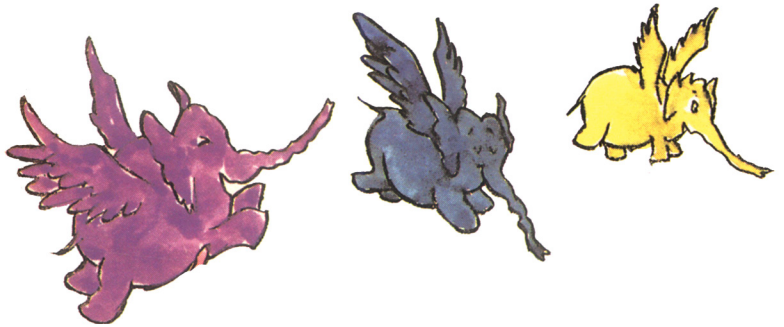

और अब उसी जादू के असर से उन हाथियों के पंख उग आए थे।

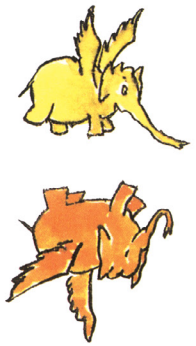

देखते ही देखते आसमान में झूमते-नाचते हाथी ही हाथी छा गए।

इतने सारे हाथी आसमान में देखकर नन्ही सीता बोली, “टीचर दीदी बहुत नाराज़ होंगी।”

हाँ सच! टीचर दीदी तो गुस्से से आग-बबूला हो रही थीं।

“एक तो मेले में बेचने
के लिए कुछ नहीं लाई,

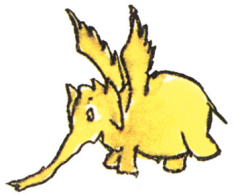

ऊपर से तुम्हारे इन
हाथियों ने,

आसमान में छाकर,

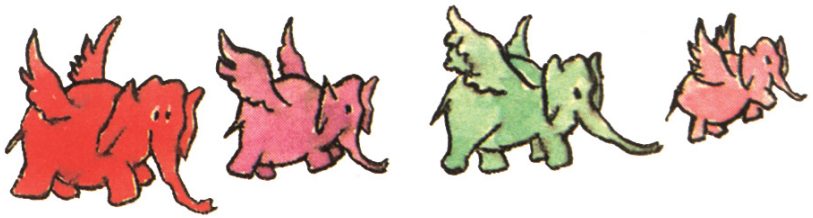

सूरज को ही ढक दिया है!

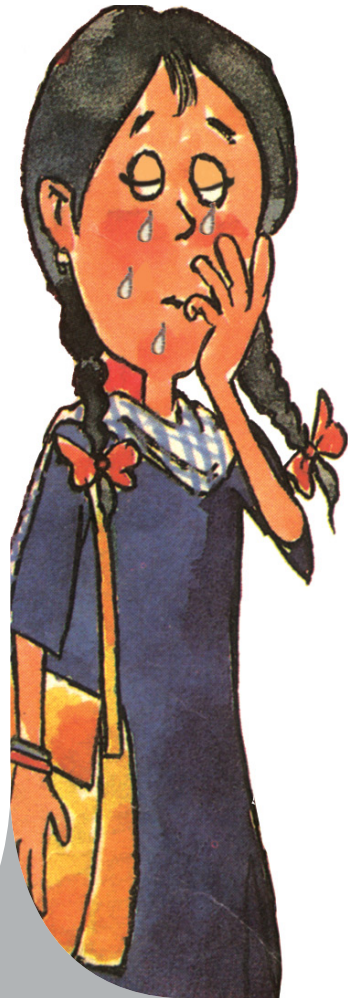

अब भला कौन आएगा
हमारे मेले में?”

शन्नो की आँखों से
मोटे-मोटे आँसू टपकने लगे।

अहमद को बहुत बुरा लगा।

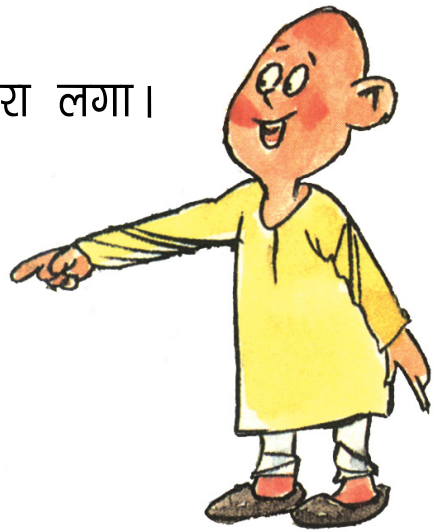

उसने शन्नो का मन
बहलाने के लिए कहा,
“वैसे भी कौन आता
है इस छोटे-से गाँव के
छोटे-से स्कूल के छोटे-से
मेले में?”

अचानक सीता चिल्लाई,
“देखो! देखो! हमारे गाँव
की ओर कितने सारे लोग
आ रहे हैं!”

लोगों ने कहा, “हमने आसमान में तुम्हारे हाथियों को उड़ते हुए देखा।

बहुत ख़ुश और बेफ़िक्र लग रहे थे वे। क्या हम कुछ हाथी ख़रीद सकते हैं?”

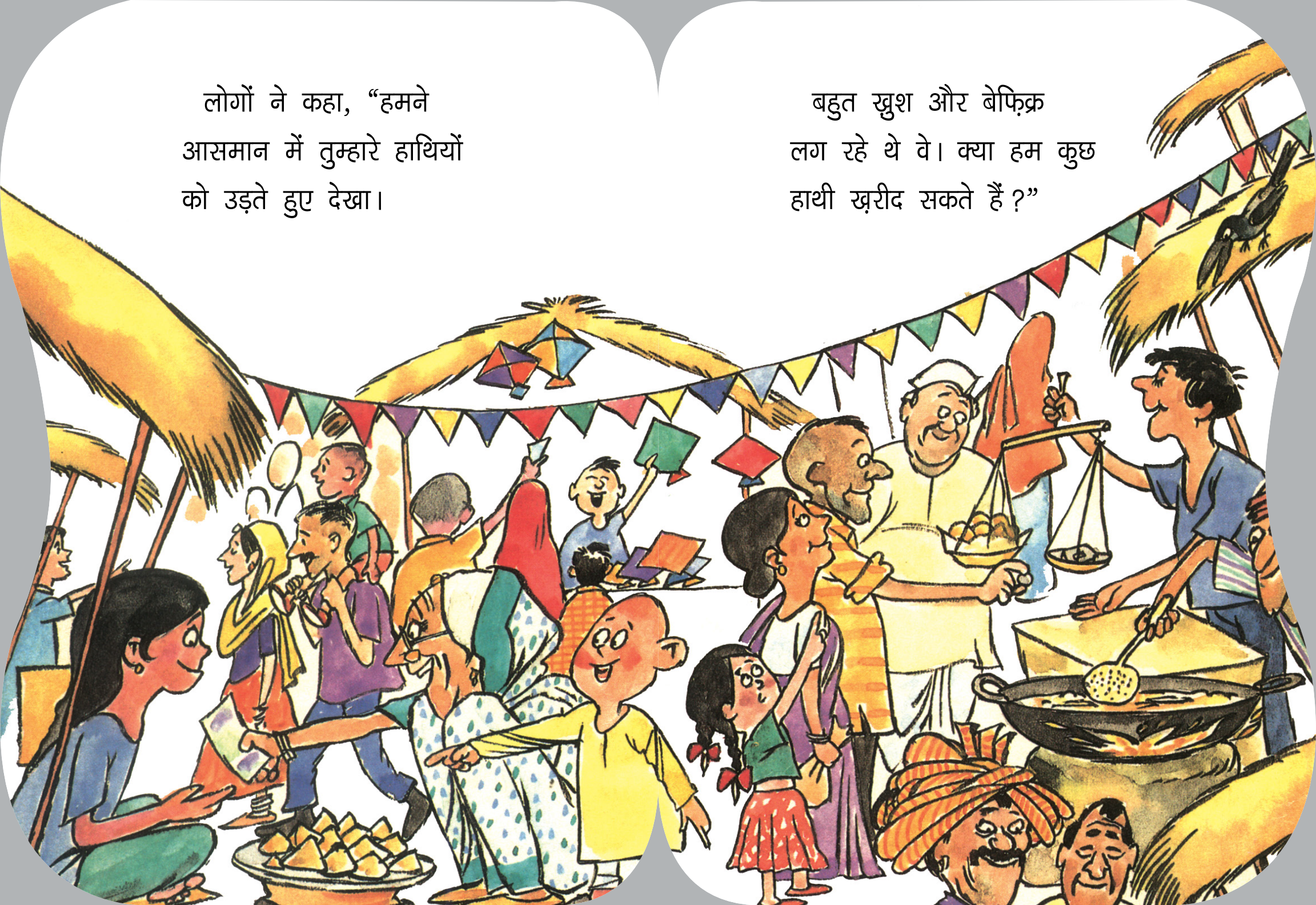

और देखते ही देखते मेले की सारी चीज़ें बिक गईं!

“अब हम अपने स्कूल की नई छत बनवा सकते हैं।

आप हमें कब तक नई खपरैल दे सकेंगे?” टीचर दीदी ने शन्नो की तरफ मुस्कराते हुए, अहमद के अब्बा से पूछा।

और शन्नो के हाथी?

अरे! कल ही तो मैंने एक हाथी को आसमान में उड़ते हुए देखा था। क्यों, तुमने नहीं देखा क्या?

थोड़ी जानकारी थोड़ा मज़ा!

शन्नो के हल्के फुल्के कागज़ के हाथी
तो एक-एक करके आसमान में उड़ गए,
पर क्या सच में हाथी उड़ सकते हैं?

क्या तुम जानते हो?

हाथी पृथ्वी पर चलनेवाला सबसे बड़ा जानवर है!

एक साधारण हाथी का वजन 3-5 टन तक होता है!

हाथी अपने कान अपने शरीर को ठंडा रखने के लिए हिलाते हैं।

हाथी अपनी सूंड से भारी से भारी लकड़ी के गट्ठर या मटर के दाने जैसी छोटी से छोटी चीज़ भी उठा सकते हैं।

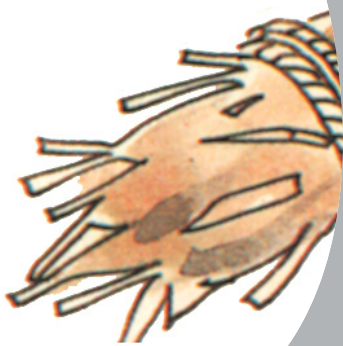

चित्र में दिखाए गए 1 से 27 तक के बिंदु रेखा खींचकर मिलाओ और रंग भरो। फिर लिखो इस जानवर के अंगों के नाम।

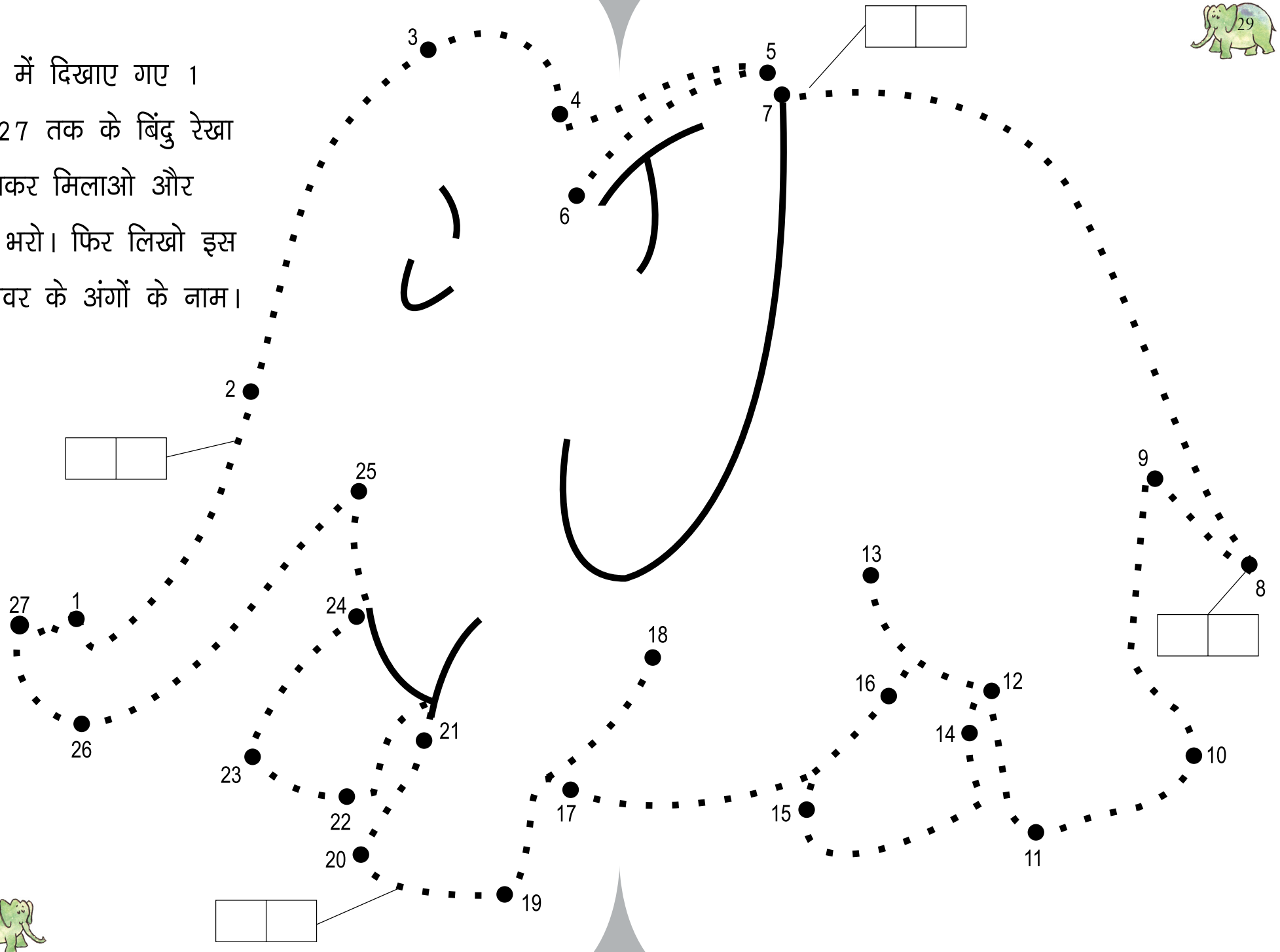

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

चिल्लाई
अजनबियों
बेफिक्र
बहलाने

xhrk /kejkt u बच्चों के लिए कहानियाँ लिखना पसंद करती हैं। वह टारगेट पत्रिका और पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय की पत्रिका पेन्सिलवेनिया गज़ेट की संपादक भी रह चुकी हैं। साहित्य एवं शिक्षा में किए गए इनके अद्वितीय योगदान के लिए इन्हें सन् 2012 में राष्ट्रीय सम्मान पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

vrq jk; ने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन किया है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुडे में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनर फ़ॉर इलस्ट्रेशन।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

अगली कहानी

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010,
पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89020-94-1
संपादकीय टीमः वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4141 6600, 4182 9998, फैक्सः 2651 4373
ई मेलः ilr@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

प्रोडक्शन टीमः प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

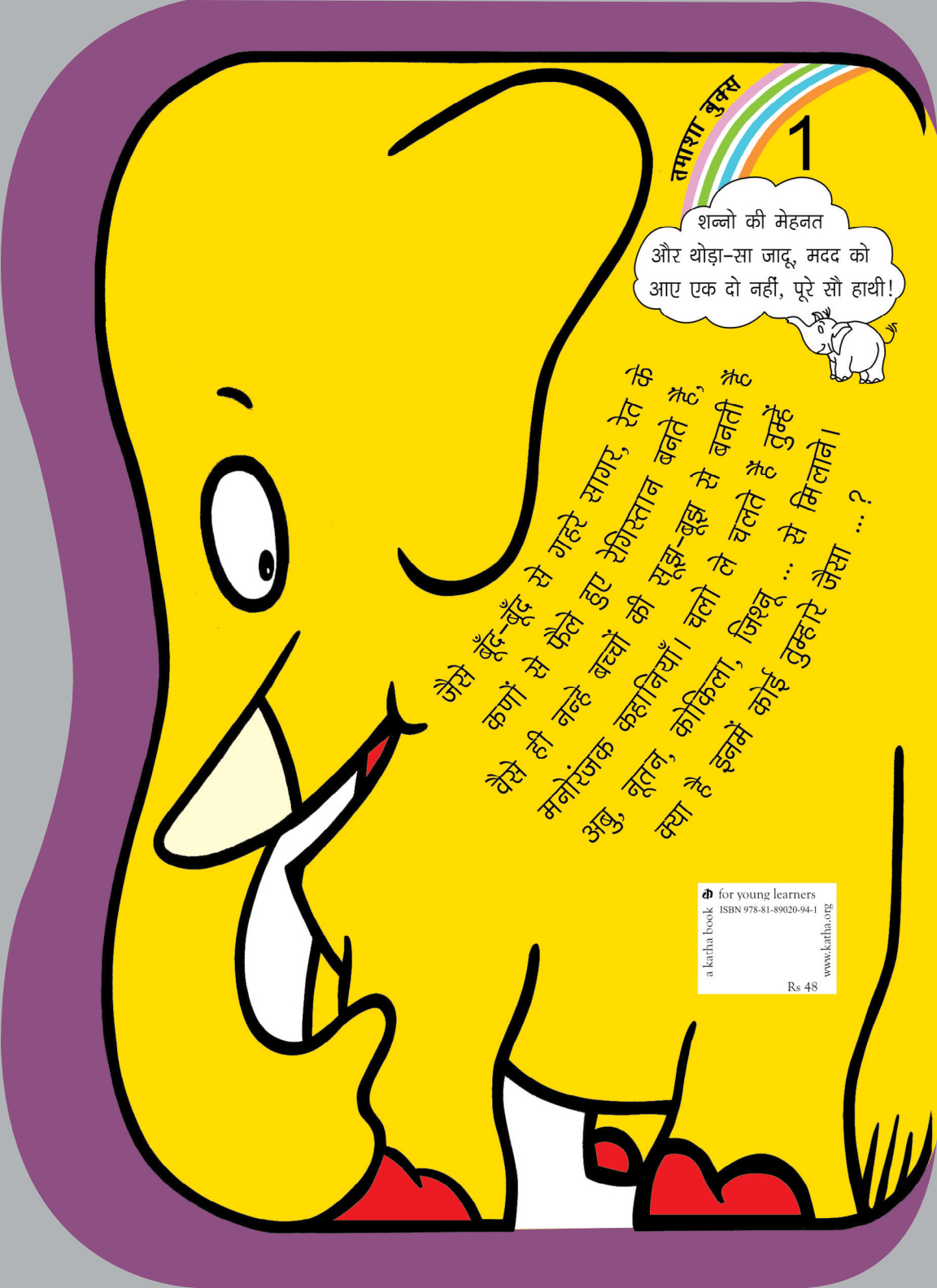

तमाशा बुक्स

1

शन्नो की मेहनत
और थोड़ा-सा जादू, मदद को
आए एक दो नहीं, पूरे सौ हाथी!

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो हे चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

a katha book for young learners
ISBN 978-81-89020-94-1
www.katha.org
Rs 48